ॐ

आत्मसिद्धि (हिन्दी)

बाह्य त्याग पर ज्ञान नहिं, वह गुरु माने सत्य ।
अथवा निज-कुल-धर्म के, गुरुओं में ही ममत्व ।।२४।।
जो जिन-देह-प्रमाण अरु, समवसरणादि सिद्धि ।
वर्णन समझे 'जिन' का, रोकि रखे निज बुद्धि ।।२५।।
प्रत्यक्ष सदगुरु-योग में, रखता दृष्टि विमुख ।
असदगुरु को दृढ करे, निज-मान-हेतु मुख्य ।।२६।।
देवादिक गति भङ्ग में, जो समझे श्रुतज्ञान ।
माने निज-मत-वेष का, आग्रह मुक्ति-निदान ।।२७।।
जाने स्वरूप न वृत्ति का, धारे व्रत-अभिमान ।
ग्रहे नहीं परमार्थ को, लेने लौकिक मान ।।२८।।
अथवा निश्चय नय ग्रहण, मात्र कथन में होय ।
लोपे सद्व्यवहार को, साधन रहित जु होय ।।२९।।
ज्ञान-दशा पायी नहीं, साधन-दशा न अङ्ग ।
लेता उनका सङ्ग जो, सो डूबा भव-पङ्क ।।३०।।
निज-मानादिक कार्य हित, जो वर्ते जीव मतार्थ ।
अन्-अधिकारी ही रहे, पाता नहिं परमार्थ ।।३१।।
नहिं कषाय उपशान्तता, नहिं अन्तर वैराग्य ।
सरलपना न मध्यस्थता, यह मतार्थी दुर्भाग्य ।।३२।।
लक्षण कहे मतार्थी के, मतार्थ निरसन काज ।
कहूँ अब आत्मार्थी के, आत्म-अर्थ सुखसाज ।।३३।।

* * *